IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

झारखंड में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति

विनोद कुमार
रिसर्च स्कॉलर,
डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन
आर.के.डी.एफ यूनिवर्सिटी रांची

डॉ. शांतनु विश्वास
रिसर्च डायरेक्टर एवं डीन एजुकेशन
आर.के.डी.एफ यूनिवर्सिटी रांची

सारांश

झारखंड जिसे खनिजों का प्रदेश कहा जाता है जहाँ हर 10 किलोमीटर की दूरी पर कोयला अभ्रक या फिर किसी ना किसी ऊर्जा के स्रोत आसानी से मिल जाती है। इसी झारखण्ड में हर तरफ हरियाली और झारखंडी परिवेश पूर्ण रूपेण समाहित है। यह प्रदेश पूरे भारत का लगभग 40% कोयला उत्पादन करता है परन्तु इसी प्रदेश में गरीबी भी बस्ती है। इस प्रदेश में टुंपा अनाम की बच्ची भात भात कहते हुए दम तोड़ देती है। इसी प्रदेश में मधुकोड़ा एवं विनोद सिन्हा जैसे लोग 4000 करोड़ के घोटाले कर देते हैं। उसी प्रदेश में गरीबी इसकी गोद में बस्ती है। गरीबी न केवल अनाज की अपितु कलम की शिक्षा की न जानें किन किन चीजों की जिससे ये प्रदेश हर दिन रू ब रू होता है और यहाँ के रहने वाली ग्रामीण आदिवासी इससे प्रभावित होते हैं। हम अगर बात करें शिक्षा की स्थिति के बारे में तू झारखण्ड में प्राइवेट स्कूलों की भरमार पड़ी है, सरकारी स्कूल भी अपने स्तर से कार्य कर रहे हैं प्रंतु एक निजी स्कूल की अपेक्षा सरकारी स्कूल का छात्र अपने आप को हर क्षेत्र में कमजोर महसूस करता है चाहे उसके आंतरिक विकास की बात हो या फिर उसके पहनावे रखरखाव उसकी किताबों की स्थिति या फिर उसकी जानकारी की बात करें तो निजी स्कूलों के सम्कक्ष यह कहीं भी नहीं ठहरता। आलम यह है की सरकारी स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षक ही अपने बच्चों को कदापि सरकारी स्कूल में नहीं पढ़ाना चाहते। झारखंड की स्थिति कमोबेश अन्य राज्यों कि तुलना में शिक्षा को लेकर बहुत अच्छी नहीं है यहाँ प्राइवेट स्कूलों की चलती बहुत ज्यादा है परन्तु सरकारी स्कूल की स्थिति बड़ी दयनीय है। जहाँ सरकार सालो करोड़ों रुपये का बजट शिक्षा पर खर्च करती है चाहे वो केंद्र सरकार हो या फिर राज्य सरकार सब पढ़े सब बढ़े का नारा भले ही भारत के हर बच्चे का अधिकार हो परन्तु यह नारा कहीं ना कहीं धूमिल होता हुआ दिखता।

परिचय

माध्यमिक शिक्षा की बात करें तो झारखण्ड में एक से लेकर 10 तक के छात्र की सरकारी स्कूलों की संख्या सबसे अधिक है परन्तु इन स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की गुणवत्ता शिक्षा नहीं मिलती शिक्षक होने के बावजूद भी शिक्षा न मिलना अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रश्न उठाता है। रांची से महज 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ब्रांडी प्रखण्ड पर यदि आप चले जाए तो आपको वहाँ सरकारी स्कूल शिक्षक तो मिलेंगे परन्तु शिक्षा नहीं मिलेगा छात्रों को 10 का पहाड़ा एवं अंग्रेजी के सब्दो का ज्ञान नहीं है। वही तो सिर्फ एक वक्त के भोजन के लिए स्कूल पहुंचते हैं इसका मूल कारण झारखण्ड में पनपने वाली गरीबी है और यहाँ के मूलवासी एवं आदिवासी समुदाय के बच्चे जो की इन स्कूलों में पढ़ने के लिए विवश है उनके पास ना तो अच्छे ब्लैक बोर्ड है नहीं बैठने के लिए बेन्च इसका व्यवस्था है और ना ही गर्मी दूर भगाने के लिए पंखे की व्यवस्था की गयी है स्कूल की स्थिति यह है की अगर बिजली चली जाये तो हर कक्षा में अंधेरा पसर जाएगा और शिक्षा किसी अंधे का आर में डूबती नजर आएगी। इस परिवेश में हम अगर शिक्षा की बात करें तो कैसे करें जहाँ मूलभूत सुविधाएं ही मौजूद ना हो वहाँ शिक्षा जा से शब्द बेमानी लगते और ऐसा लगता है मानो हाउ झारखंड के माध्यमिक शिक्षा का मजाक उड़ा रहे हो। हर वर्ष झारखंड सरकार हर माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के सफल बच्चो की लेखाजोखा मीडिया में साझा करती है परन्तु अगर उनसे उनके संघर्ष की बातें करें तो यह पता चलेगा कि उन्होंने लालटेन में या फिर मोमबत्ती में अपनी पढ़ाई कर अपनी पहनाया बनाया है।

कुंजी शब्द:

झारखंड माध्यमिक शिक्षा में होने वाली त्रुटियां, सरकारी स्कूल में बदहाल शिक्षा की स्थिति, छात्रों को शिक्षा ग्रहण करने में होने वाली कठिनाइयों, बस नई तकनीक से शिक्षा को ना समझने की परेशानियां।

क्रियाविधि:

झारखंड की माध्यमिक शिक्षा को लेकर जब हमने सर्वे किया तो इस सर्वे में पाया कि झारखंड में एक लगभग हर सवाल 11,00,000 छात्र छात्राएं माध्यमिक की परीक्षाएं देती है जिसमे आधे से अधिक छात्र छात्राएं सरकारी स्कूल से पर्चे को भरते हैं क्योंकि झारखंड छात्र छात्राओं का गढ़ है। जब हमने 1000 छात्र छात्राओं पर शोध किया तो यह पता चला है की सरकारी स्कूल के छात्र छात्राएं कुछ मामलों में निजी स्कूल के छात्र छात्राओं से कहीं आगे जैसे की संस्कार की बात करें तो निजी स्कूल के छात्र छात्राएं सरकारी स्कूल्स के छात्र छात्राओं से कहीं पीछे है वही खेल कुल मिलाके ये बात करे तो सरकारी स्कूल की स्थिति इस परिवेश में अच्छी है परन्तु अगर हम बात करें अंग्रेजी सब तो का उच्चारण तो निजी स्कूल के छात्र छात्राएं कहीं आगे है। यह सभी कार्य प्रणाली इसलिए खराब है क्योंकि स्कूल के शिक्षकों को ही अंग्रेजी शब्द देख कर उच्चारण करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। 500 से अधिक अभिभावकों पर किए गए सर्वे मैं इन प्रश्नों के माध्यम से जो तथ्य सामने आए वह चौंकाने वाले थे जिसके कुछ प्रश्न इस प्रकार के हैं :

1. सरकारी स्कूल की शिक्षा की प्रणाली निजी स्कूली शिक्षा की प्रणाली से बेहतर है?

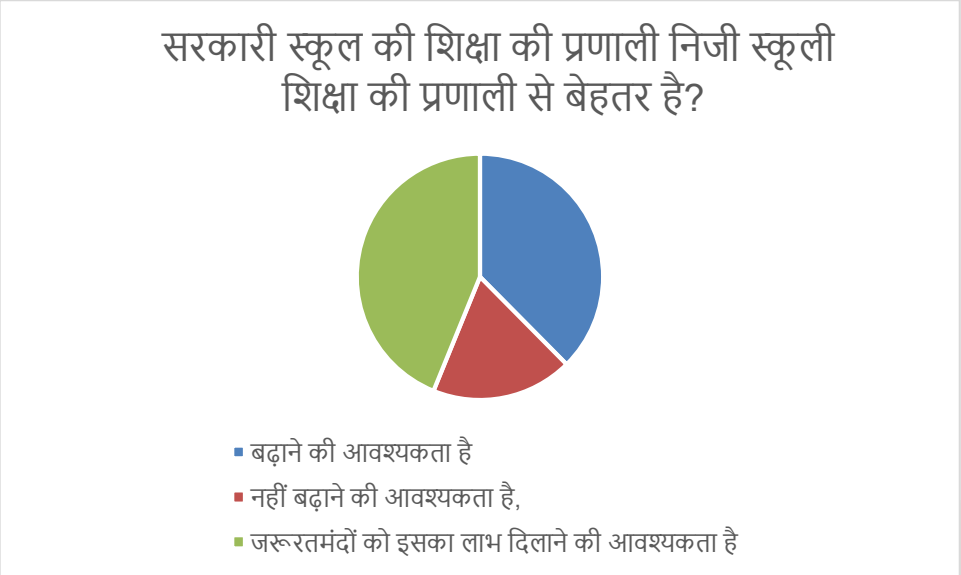

2. क्या झारखंड में दिल्ली की तर्ज पर सरकारी स्कूलों को भी स्मार्ट स्कूल बनाना चाहिए?

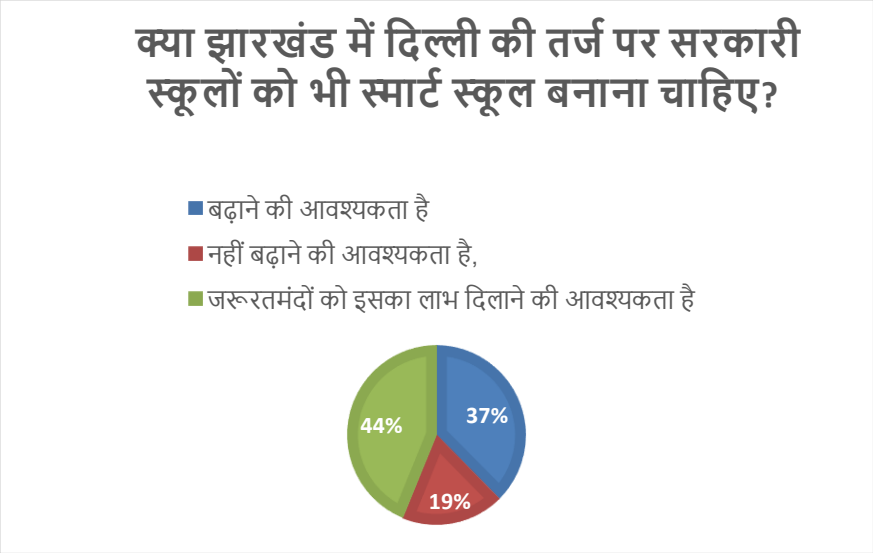

3. क्या झारखंड के छात्र छात्राओं को निजी स्कूलों की तरह सुविधाएं नहीं मिल पाती?

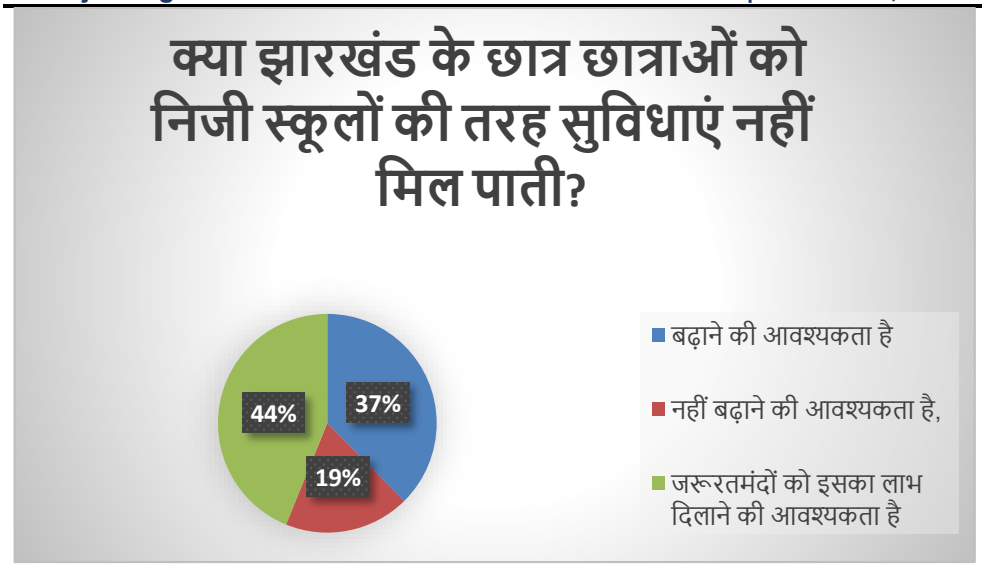

4. शिक्षा प्रणाली को और अधिक मजबूत करने का दायित्व किनका है?

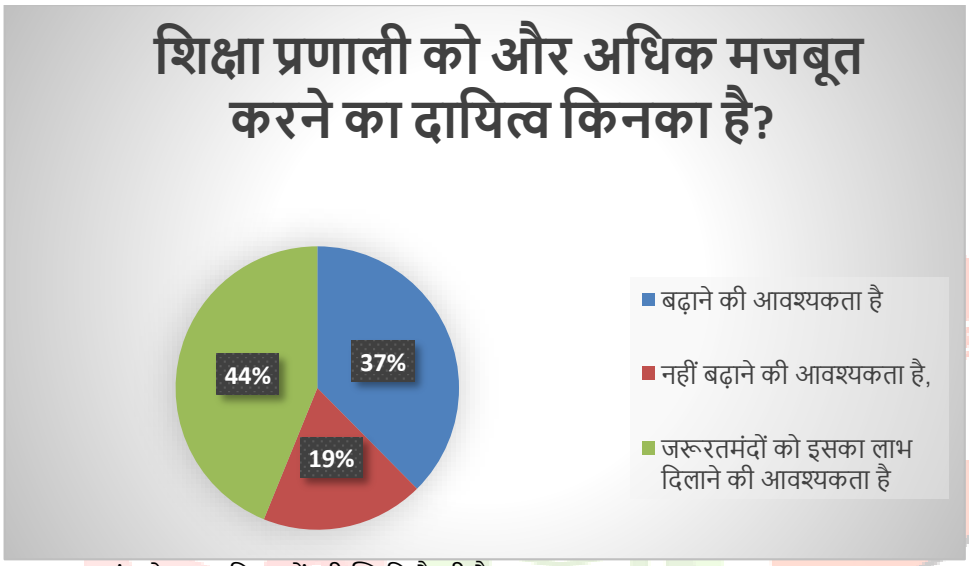

5. झारखंड के पारा शिक्षकों की स्थिति कैसी है?

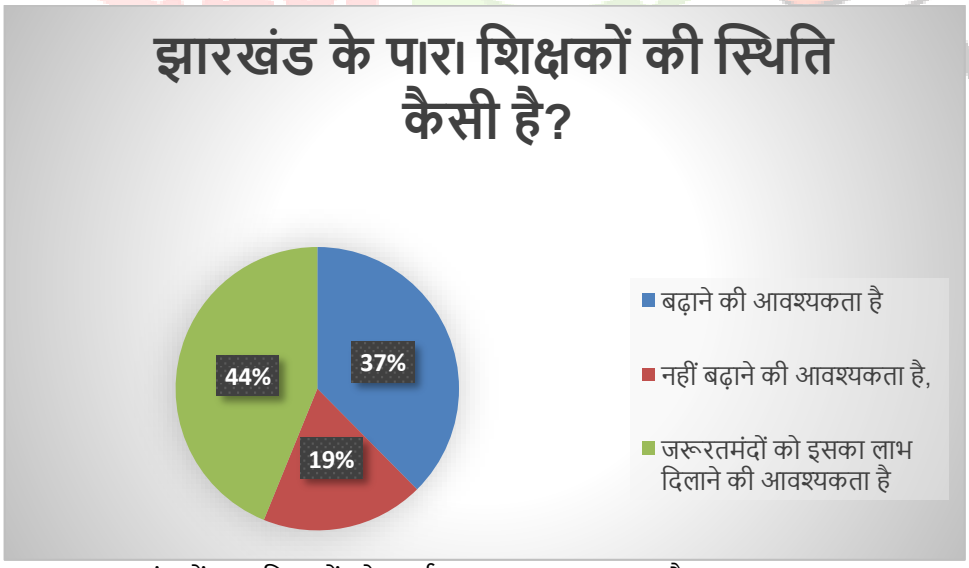

6. क्या झारखंड में पारा शिक्षकों को स्थाईकरण करना आवश्यक है?

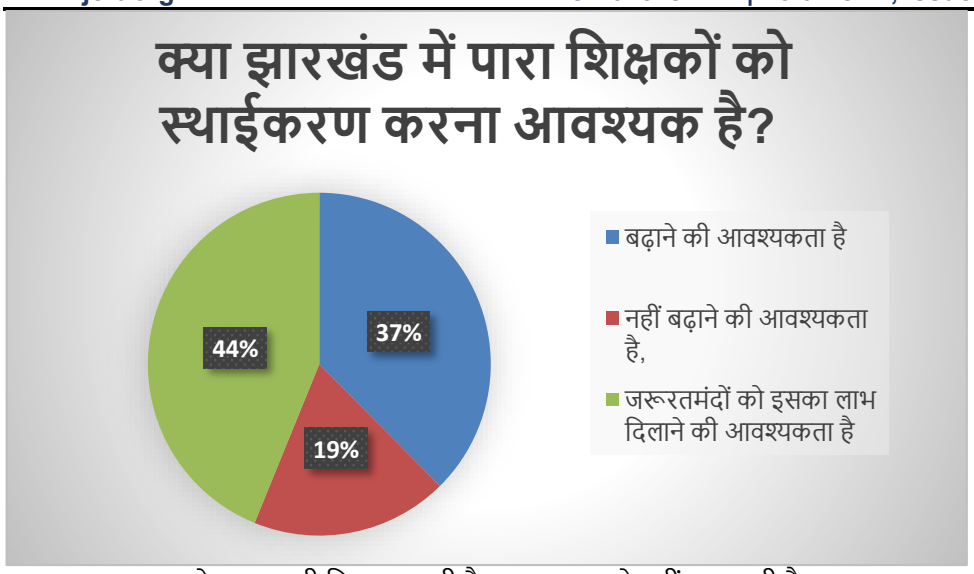

7. क्या भ्रष्टाचार के कारण ही शिक्षा प्रणाली है सुचारू रूप से नहीं चल पाती है?

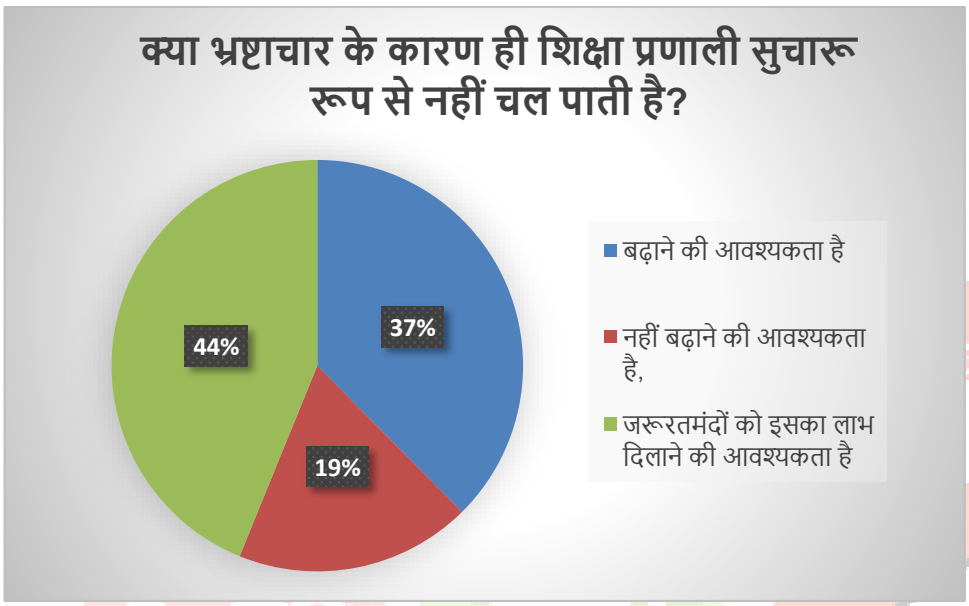

8. क्या सरकारी स्कूल की खराब आधारभूत संरचना शिक्षा में एक बहुत बड़ा रोड़ा है?

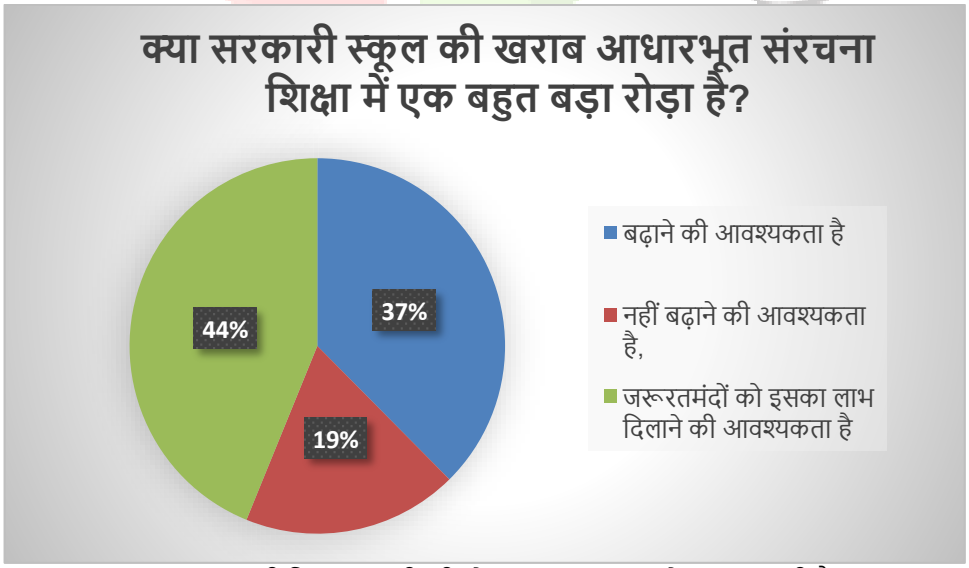

9. क्या भारत सरकार की शिक्षा प्रणाली की योजनाएं छात्र छात्राओं तक पहुंचती है ?

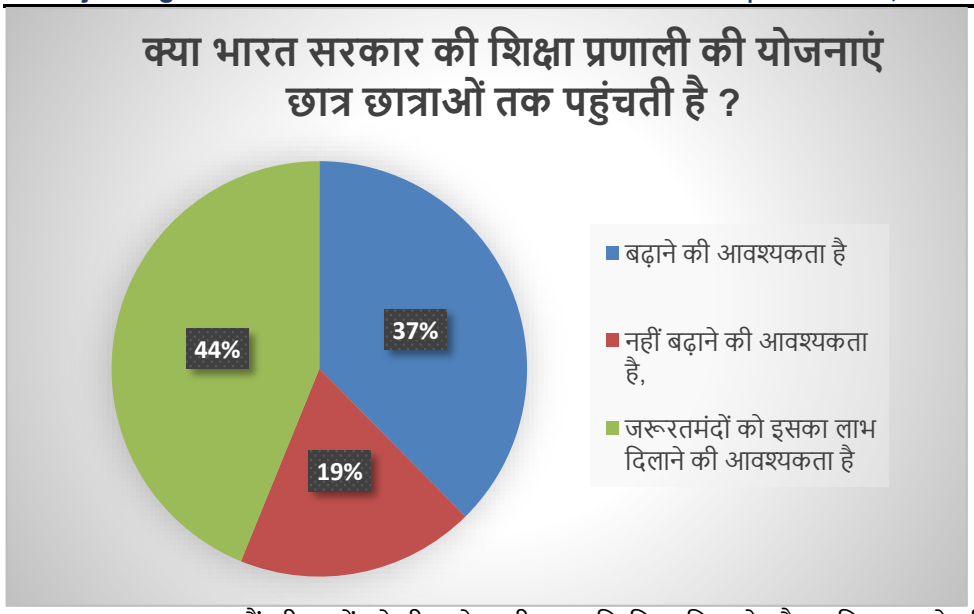

10. क्या आप सहमत हैं की छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति कि राशि को और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है?

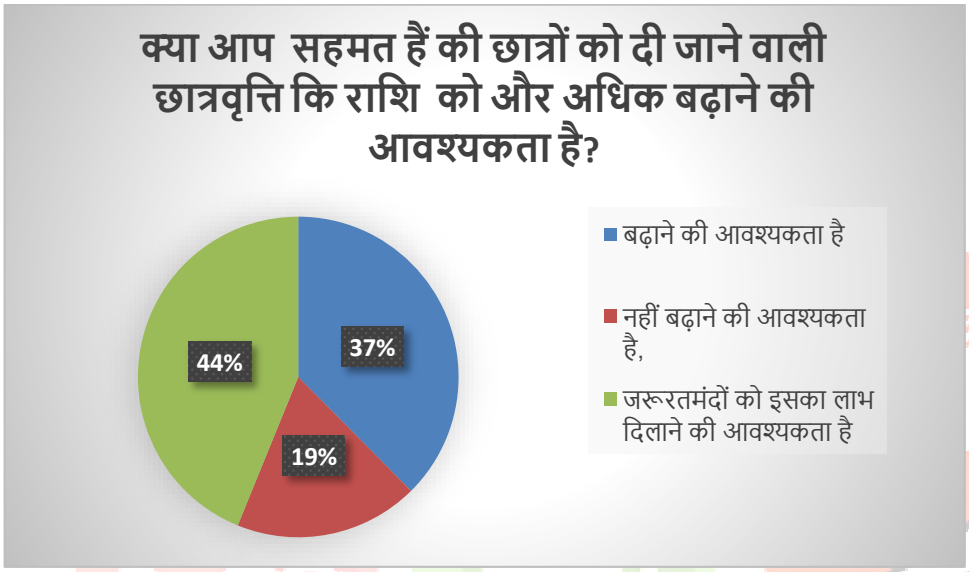

खोज:

सर्वे के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से प्रभावित होता है कि झारखंड को सबसे अधिक अगर आवश्यकता है तो वह शिक्षा में विकास की जरूरत है इन प्रश्नों के माध्यम से एक चीज़ दो स्पष्ट तौर पर नजर आता है कि झारखंड जो की कोयले और खनीज पदार्थों का समृद्ध राज्य है। उसके गोद में गरीबी बसने का सबसे बड़ा कारण यहाँ के लोगों का गरीब हो ना मज़दूरों की संख्या कहा जाए तो झारखंड में सबसे अधिक है ॥ यहाँ के मजदूर राज्य से बाहर जाकर के दूसरे राज्यों में काम को विवश इस व्यवस्था के कारण वह अपने बच्चों को सही शिक्षा नहीं दे पाते और शिक्षा के अभाव में उनके बच्चे या तो अनपढ़ या फिर दसवी तक पास ही रह जाते हैं। माध्यमिक शिक्षा की स्थिति पर और अधिक गौर करें तो महाजन रांची से दो चार किलोमीटर दूर अगर आप चले जाए तो आपको स्कूल बच्चे या तो सिर्फ मिड डे मील खाने के लिए जाते हैं या फिर उनका एक उद्देश्य होता है की किसी तरह से दसवीं वो पास कर जाए अभी भी गांव और ग्रामीणों की यह सोच है की ज्यादा पढ़ने से बहुत कुछ नहीं होता।

निष्कर्ष:

सर्वे रिपोर्ट के माध्यम से एवं प्रत्यक्ष अनुभव से मैंने यह पाया कि झारखंड में विकास होना अभी और बाकी भले ही हमने 22 साल का सफर तय कर लिया हो जिसमे झारखंड युवा राज्य के रूप में जाना जाता है। इस युवा राज्य में अभी भी गरीबी पनपती है और इसका असर शिक्षा पर सबसे ज्यादा पड़ता है माध्यमिक शिक्षा की बात करें तो कक्षा एक से लेकर पांच तक के छात्र छात्राएँ स्कूल कम जाते है। कारण माता पिता का शिक्षित ना हो ना, गरीबी का आलम घर में होना, शिक्षा की उपयोगिता के बारे में स्पष्टीकरण न करना यह सभी प्रमुख कारण हैं जिसके कारण माध्यमिक शिक्षा के छात्र छात्राएं स्कूल नहीं जाते। यदि घर में गरीबी रहेंगी बच्चों को अभी बस होकर घर से बाहर निकल गए दो पैसे कमाने ही पड़ेंगे जिसका असर उनके पठन पाठन पे पड़ता और यही आलम है कि उन्हें या तो फिर सब्जी बेचने, राजमिस्त्री का काम करने, लेबर का काम करने पर विवश करता है। माध्यमिक शिक्षा को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए सरकार के साथ साथ एनजीओस एवं राजनेताओं को आगे आना होगा और जो भविष्य अंधकार में जा रहा है उनको उजाले की ओर लाना होगा।

संदर्भ:

http://www.ignited.in/I/a/200778

https://www.prabhatkhabar.com/state/jharkhand/ranchi/jharkhand-foundation-day-schools-and-students-increased-but-teachers-shortage-remained-srn

https://newswing.com/education-jharkhand-58-7-young-population-does-not-know-read-write/112917/